ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II ISSUE-X OCT. 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

महाराष्ट्र के संत नामदेव

प्रा.डॉ.ठाकूर विजयसिंह
हिन्दी विभाग प्रमुख
यशवंत महाविद्यालय, नांदेड.
मो.नं.९७३०१९३८८२

महाराष्ट्र संतो की, भूमि है । संत नामदेव एक श्रेष्ठ निर्गुण कवि है । एक और महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय में उनका स्थान विशेष उल्लेखनीय है । संत नामदेव का मन कभी घर-गृहस्थी में नही लगा इसलिए वे पंढरपूर में जाकर विठ्ठलजी के सेवा में अपने आप को रखा । संत नामदेव जीने समतावादी विचार पंजाब प्रांत में घुमान में अपनी अभिव्यक्ती को स्थापित किया । उनकी भेट संत ज्ञानेश्वर तथा उनके भाई-बहनों से हुई यही पर उन्होंने गुरू विसोबा खेचर से दीक्षा ली । डॉ.गोविंद रजनीश का मानना है कि "कार्तिक शुक्ला एकादशी, शके सम्वत, ११९२ रविवार २६ अक्टूबर १२६० को नामदेव जी का जन्म हुआ ।" अधिकाश लोगों का मानना है नामदेव जी का जन्म १२७० को हुआ । जन्म तिथि के संबंध में अनेक प्रकार के वैचारिक मतभेद है । जन्म गाव के संबंध में भी मतभेद थे, विविध शोधकार्या से यह स्पष्ट हो गया है कि संत नामदेव महाराष्ट्र के हिंगोली जिले के नरसी बामगी नामक गाँव में शिंपी (दर्जी) परीवार में हुआ । संत नामदेवजी ने अपने पदों में ईश्वरोन्मुखता, गुरू महिमा, सत्संगति, बोधात्मकता आत्मनिवेदन, राष्ट्रीय भावात्मक एकात्मकता अनेक पदों में अभिव्यक्त हुई है । उन्हे कभी मंदिर में भजन गाते समय में बाहर निकाला गया । कभी उनके जाती को निम्न समझकर दूतकारा गया । संत नामदेवजी की ईश्वर के प्रती श्रध्दा अटूट हैं । मंदिर के बाहर से घुमते हुए आन्तरिक मन से शुध्द आचरण से भक्ति किया करते थे । वाणी मधुर तथा ज्वलंत सत्य को उद्‌घाटीत करने का साहस, समता, बंधुता तथा सामाजिक न्याय के आग्रही नामदेवजी अपने पदों में कहते है,

"हीन दीन जात मोरी पंढरी के राया । ऐसा तुमने नामा दरजी कायक बनाया ।
टाल बिना लेकर नामा राऊल में गाया । पूजा करते ब्राह्मण उनैन बाहर ढकाया ।

देवल के पिछे नामा अल्लक पुकारे । जिदर जिदर नामा उदर देऊलही फिरे ।
नाना वर्ण गवा उनका एक वर्ण दूर । तुम कहा के ब्रह्मणा हम कहाँ के सूद ।
मन मेरी, सुई तनो मेरा धागा । खेजरजी के चरण पर नामा सिपी लागा ।"

प्रस्तुत अपने पदों में संत नामदेव जीने जाति के उच्च-निचता के भेद पर ईश्वर दर्शन से उन्हे कैसा दूर रखा गया यह बताया गया है । वे कहते है मैं टाल, बिना लेकर मंदिर गया तो पुजारी ब्राह्मणों ने मुझे मंदिर से बाहर निकाला, मेरा अपराध केवल जाति से दर्जी (शिंपी) है । जाती के आधार पर मनुष्य के उच्च-निचता तुझे क्यों बनाई पंढरी के पीछे-बाहर गोल गुमने लगता हूँ । नाना वर्ण गवा उनका एक वर्ण दूध संसार में न जाने कितनी जातियाँ है फिर भी ब्राह्मण ही श्रेष्ठ क्यो ? तुम कहाँ के ब्राह्मण हम कहाँ के शुद्र ? अर्थात नामदेवजी कहते है संसार में जाति के कारण कोई श्रेष्ठ नही होता, सृष्टी सभी की है । नामदेव अपने गुरू को याद करते है, अपने मन को सुई की उपमा तथा शरीर को धाका कहाँ है । संत नामदेजी के ६१ पद "गुरूग्रंथ साहेब" में संगृहित है । यह पद दक्खिनी हिंदी में लिखें गये है । उनके पिता का नाम दामाशेट तथा माता का नाम गोणाई था । यह परिवार वारकरी संप्रदाय के वातावरण फलने-फुलने लगा था । प्रारंभ में संगुण भक्ति करनेवाले नामदेवजी अपने गुरू विसोबा खेचरजी के छत्र-छाया में आकर निर्गुण होने लगते है । उनके अनेक अभंग मराठी भाषा में रचित है । संत नामदेवजी संत संगति पर वक्तव्य करते हुए कहते है कि,

"संत सू नेना संत सू देना । संत संगति मिली दुस्तर तिरना ॥
संत की छाया संत की माया । संत संमति मिली गोविंद पाया ॥
असंत संगति नामा कबहू न जाई । संत संगति मैं रष्यो समाई ॥"

उपरोक्त पदों में कहते है कि, मनुष्य जीवन में संत से अच्छा आचार-विचार लेना, जीवन में उपयोग कर हमारे द्वारा अच्छा विचार देना चाहिए । संत की संगति मिलना बड़ा कठीण काम है । हमेशा अच्छे संतो की संगति बढ़ाना चाहिए । संतों की छाया, विचार नैतिकता से रहेगे तो गोविंद मिलेंगे । असंगति नरक के ओर ले जाती है । जीवन मेरा संतो के संगति के कारण लाभप्रद हुआ है, ऐसा नामदेवजी मानते है ।आधुनिक काल में जो ढोंगी बाबा, साधु है आवडम्बरे पर भी करारा व्यंग संत

नामदेवजी करते है ।अंधश्रध्दा का हमेशा विरोध करते है । संत नामदेवजी का भाषा निरीक्षण भी अत्यंत सुक्ष्म था । मराठी, पंजाबी, राजस्थानी, ब्रज, हरियाणी, आदि शब्द उनके पदों में दिखाई देते है ।

हिंदू अना, तरकू, काणा दोहा तो गिआना सिआणा
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ।
नामा सोई सेविआ जग देहुरा न मसीति ।

प्रस्तुत पदों में नामदेवजी (हिन्दू-मुसलमान) दोनों जाति के अंधश्रध्दा और बाह्यउम्बरों पर विरोध किया है । मानव जाति के प्रति विचार प्रकट किया है । प्राचीन रूढ़ी-परम्पराओं में दोनों धर्मो के लोग अंधविश्वासों में जी रहे है । उसी में देव-देवताओं की पुजा करते है । इसी कारण मानव-मुक्ति समाज से दूर चले जा रही है । मनुष्य को मंदिर-मस्जिद जाने के बजाय अपने मन में ही ईश्वर आराधना करना चाहिए । सामाजिक विषमता को दूर कर सामाजिक एकात्मकता को बनाए रखना है । सामाजिक पाखण्डो का विरोध करना चाहिए । हमेश सत्संगति को आत्मसात कर सत्संगति में विलीन होना चाहिए ।

संत नामदेवजी सचमुच एक मानवतावादी थे । ऐसे महान संत का ३ जुलाई १३५० में पंढरपूर के विठ्ठल मंदिर में महाद्वारपर अस्सी उम्र में समाधी ली ।

संदर्भ ग्रंथ :-

१) संत कवि नामदेव:डॉ.हुमुमचंद राजपाल.
२) नामदेव रचनावली:संपा. डॉ.गोविंद रजनीश
३) प्रादेशिक भाषा और साहित्येतिहास:डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे
४) हिंदी साहित्य का इतिहास:डॉ.माधव सोनटक्के
५) हिंदी साहित्य इतिहास:आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
६) दखिनी साहित्य का इतिहास:डॉ.दशरथराज असनानी